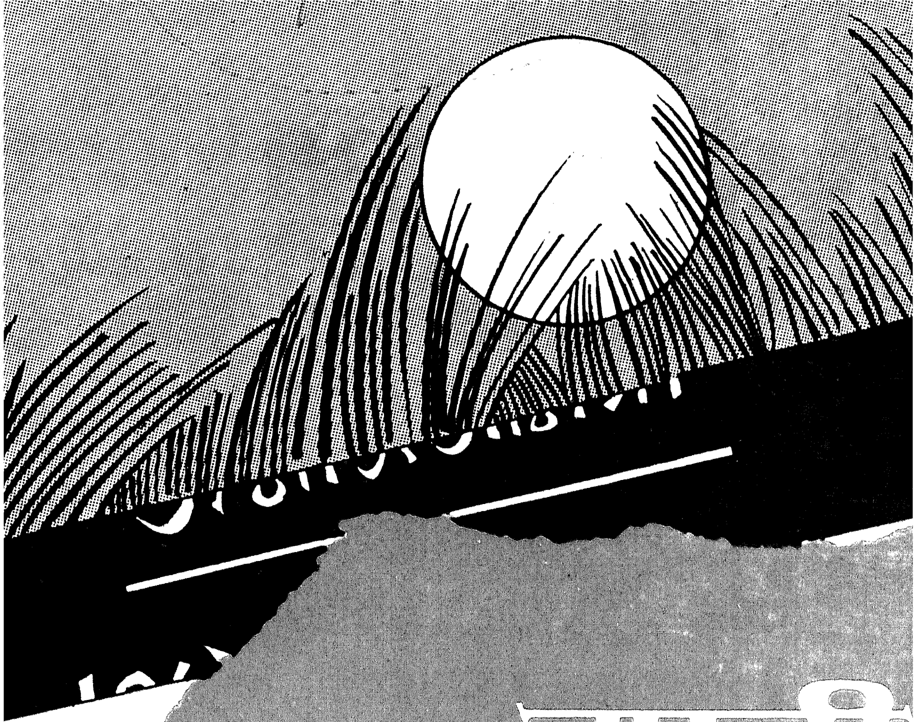


तपती पगडंडियों पर पद-यात्रा

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

प्रस्तुत ग्रन्थ तपती पगडंडियों पर पद-यात्रा में श्री 'प्रभाकर' के पत्रकार-जीवन मे प्रवेश करने से ले कर देश के स्वतन्त्र होने तक की संस्मरणात्मक संघर्ष-गाथा अत्यन्त सरस एवं रोचक शैली में प्रस्तुत की गई है। इस लम्बी अवधि मे प्रभाकर जी को जो खट्टे-मीठे-कड़वे और चरपरे अनुभव हुए, जिन संघर्षों से उन्हें जूझना पड़ा, जो यातनाएँ सहनी पड़ीं, जिन कुचक्रों का सामना करना पड़ा और उन सबके बीच जिस दृढ़ता से वे डटे रहे, उस सबका लेखा-जोखा एक व्यापक फलक पर इस पुस्तक में अंकित है।

पत्रकारिता की देहली पर कदम रखते ही प्रभाकर जी को एक स्थापित मासिक पत्र के विशेषांक के सम्पादन का दायित्व वहन करना पड़ा। उस समय पत्रकारिता समाज-सेवा का साहित्यिक अनुष्ठान था और देश में अंग्रेज़ी शासन के कारण उसके साथ तरह-तरह के जोखिम भी जुड़े रहते थे। प्रभाकर जी ने यौवन के प्रथम चरण में ही इस जोखिम भरे काम को अपने कन्धों पर उठा लिया और जिस जीवट के साथ इसका निर्वाह किया, वह इस ग्रन्थ में सर्वत्र लक्षित किया जा सकता है। इस पुस्तक में जिन घटनाओं का चित्रण है, वे लोमहर्षक भी हैं और प्रेरणाप्रद भी। ब्रिटिश शासन के बहिष्कार के लिए प्रयुक्त उनके शब्दों की ऊर्जा की प्रखरता देखते ही बनती है।

इस पुस्तक में एक ओर जहाँ संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज और निबन्ध का अनोखा आनन्द मिलता है, वही कहानी की घटनात्मकता, नाटकीयता, चरित्र-चित्रण की चारुता और सूक्ष्म चिन्तन की अतिशयता भी मन को मोह लेती है। प्रभाकर जी की शैली की इसी विशेषता के कारण यह ग्रन्थ एक रोचक उपन्यास-सा प्रतीत होता है, जिसे एक बार हाथ में लेने पर पाठक अन्तिम पृष्ठ तक पढ़े बिना नहीं रह सकता।

हमारा विश्वास है, पाठक तपती पगडंडियों पर पद-यात्रा का भरपूर आनन्द उठायेंगे।